प्रातः क्लास 6/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। मनुष्य बाप को सच्चा बादशाह भी कहते हैं। अंग्रेजी में बादशाह नहीं कहते। उसमें सिर्फ सच्चा फादर ही कहते हैं। गाड फादर इज ट्रुथ कहते हैं। भारत में ही कहते हैं सच्चा बादशाह। अभी फर्क तो बहुत है। वह सिर्फ सच कहते हैं। सच सिखलाते हैं। सच्चा बनाते हैं। यहाँ कहते हैं सच्चा बादशाह। सच भी बनाते हैं और सच खण्ड का बादशाह भी बनाते हैं। उनको सच्चा बादशाह भी कहते हैं। यह तो बरोबर मुक्ति भी देते हैं–जीवनमुक्ति भी देते हैं। जिसको फल कहते हैं। लिबरेशन और फ्रूशन। भक्ति का फल देते हैं। और भक्ति से लिबरेट करते हैं। भक्ति से लिबरेट भी करते हैं और फल भी देते हैं। बच्चे जानते हैं हमको बाबा दोनों ही देते हैं। लिबरेट तो सभी को करते हैं। फल तुमको देते हैं। लिबरेशन और फ्रूशन। यह भी भाषा बनाई हुई है ना। सभी अपने2 किसम से बनाते हैं। भाषाएँ तो बहुत हैं ना। शिवबाबा के भी बहुत नाम रखे हुए हैं। कोई को कहो उनका शिव नाम है तो कह देते हम तो उनको मालिक ही कहते हैं। मालिक तो ठीक है; परन्तु उसका भी नाम चाहिए ना। नाम–रूप से न्यारा कोई चीज़ होती ही नहीं। मालिक भी कोई चीज़ का बनता है। नाम–रूप तो जरूर है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप बरोबर लिबरेट भी करते हैं फिर शान्तिधाम में भेज देते हैं। शान्तिधाम में सभी को जरूर जाना है। अपने घर का दीदार सभी को करना है। घर से ही आये हैं। तो पहले उनका ही दीदार करेंगे। इसको कहते हैं गति–सद्गति। भल अक्षर कहते हैं; परन्तु अर्थ रहित। तुम बच्चों को तो फीलिंग रहती है हम अपने घर भी जावेंगे और फिर फल भी मिलेगा। नम्बरवार तुमको मिलता है तो और धर्म वालों को फिर समय अनुसार मिलता है। बाप ने समझाया था वह पर्चा है बहुत अच्छा, स्वर्गवासी हो या नर्कवासी? तुम बच्चे ही जानते हो यह दोनों गॉड फादरली वर्थ राइट है बाप का। तुम लिख भी सकते हो बाप से ..... बच्चों का यह वर्थ राइट है। बाप का बनने से दोनों चीज़ प्राप्त होती हैं। तो यह पर्चा हिन्दी में तो ....। अंग्रेजी में लिखा नहीं है। बाबा ने कितना बार कहा है अंग्रेजी में भी बनाओ। दोनों के लिए लिखना पड़े ....। वह है रावण का वर्थ राइट। वह है परमपिता परमात्मा का वर्थ राइट। वह है भगवान का वर्थ राइट। .... है शैतान का वर्थ राइट। ऐसे लिखना चाहिए जो पत्थर बुद्धियों को कुछ लगे। बाबा ने बहुत बार समझाया है; परन्तु हिन्दी को अंग्रेजी बनाना शायद किसको आता ही नहीं। अभी तुम बच्चों को हेविन स्थापन करना है। .....ना काम करना है। अभी तो तुम जैसे कि बेबीज़ हो। जैसे कलियुग की स्थापना को कहते हैं अभी बेबी है। बाप कहते हैं सतयुग की स्थापना में भी बेबी है। डायरैक्शन पर अमल नहीं करते। यह है बहुत जरूरी।

अभी तुम बच्चों को वरसा मिल रहा है। रावण का कोई वरसा नहीं कहेंगे। गाड फादर से तो वरसा मिलता है। वह कोई फादर थोड़े ही है। उनको तो शैतान कहा जाता है। शैतान का वरसा क्या मिलता है? विकार मिलते हैं। शो भी ऐसा करते हैं। तमोप्रधान बन जाते हैं तो गदहे मिसल बन जाते हैं। अभी दशहरा पास हुआ, कितना मनाया। सिरोमणि मनाते हैं। बहुत खर्चा करते हैं। विलायत से भी निमंत्रण दे बुलाते हैं। सबसे नामी–ग्रामी दशहरा मनाना है मैसूर का। पैसे वाला भी बहुत है। तुम क्या कहेंगे। पैसे वाला तो भल है; परन्तु अकल कहाँ। रावण राज्य में पैसा मिलता है तो अकल ही चट हो जाता। बाप पैसे भी देते हैं तो अकल भी देते हैं। यहाँ भल पदमपति हैं; परन्तु शैतान हैं। बाप डिटेल में बैठ समझाते हैं। इनका नाम ही है रावण–राज्य। उसको फिर कहा जाता है ईश्वरीय राज्य। राम–राज्य कहना भी रांग हो जाता है। राम राज्य कहने से राम ने तो स्त्री गंवा दी थी। राज्य गंवा दिया। उनका नाम फिर बुद्धि में न आना चाहिए। गांधी को भी मनुष्य अवतार मानते थे। उनको ट्रेन में कितने पैसे देते थे। वह सिर्फ इशारा करते थे। मनुष्यों को तो पता था कि यह राम–राज्य स्थापन कर रहे हैं। उनको भारत का बापू जी कहते थे। अभी यह तो सारे विश्व का बापू जी है। अभी तुम यहाँ बैठे हो जानते हो कितनी जीवात्माएँ होंगी। जीव तो विनाशी है। बाकी आत्मा है अविनाशी। आत्माएँ तो ढेर हैं। जैसे ऊपर से सितारे रहते हैं ना। सितारे जास्ती हैं या आत्माएँ जास्ती हैं? क्योंकि तुम हो धरती के

सितारे, वह है आसमान के सितारे। तुमको देवता कहा जाता। वह फिर उनको भी देवता कह देते हैं। तो वह सितारे जास्ती हैं या यहाँ जास्ती हैं। तुमको लक्की सितारे कहा जाता है ना। तो वह सितारे जास्ती हैं या कम हैं, या यह जास्ती हैं या कम हैं? कि दोनों बराबर हैं? (दो तीन विचार निकले, कोई ने कहा ऊपर वाले सितारे जास्ती हैं, कोई ने कहा आत्माएँ जास्ती हैं, कोई ने कहा विचार करेंगे) अच्छा इस पर आपस में फिर क्लास में बात–चीत करना। बाबा अभी इस बात को नहीं छेड़ते हैं। यह तो समझाया है सभी आत्माओं का एक बाप है। उनकी बुद्धि में तो सभी हैं जो भी मनुष्य मात्र हैं..... यह तो तुम जानते हो सृष्टि पर मनुष्य रहते हैं, कच्छ–मच्छ आदि तो सभी पानी में रहते हैं। मनुष्य धरती पर रहते हैं, वह पानी में। यह तो सभी जानते हैं सारी सृष्टि समुद्र पर खड़ी है। यह भी कोई सभी को मालूम नहीं है। बाप ने समझाया था यह रावण राज्य सारी सृष्टि पर है। सागर तो चारों तरफ है ना। कहते हैं नीचे बैल है उनके सिंगों पर सृष्टि खड़ी है। फिर जब थक जाता है तो वह सिंग बदलती है। ऐसे करती है तो सृष्टि आ जाती, ऐसे करने से सृष्टि खलास हो जाती है। अभी पुरानी दुनिया खलास हो नई दुनिया स्थापन होनी है। शास्त्रों में तो अनेक प्रकार की बातें दन्तकथाओं में लिख दी हैं। यह तो बच्चे समझते हो यहाँ हम सभी आत्माएँ शरीर साथ हैं। उनको कहते हैं जीवात्माएँ। वह जो आत्माओं का घर है वहाँ तो शरीर है नहीं। उनको कहा जाता है निराकारी। जीव आकार है। तो साकार कहा जाता। निराकार को शरीर नहीं होता। साकार को शरीर है। साकारी सृष्टि इसको कहा जाता है। वह है निराकारी सृष्टि। आत्माओं की भी सृष्टि कहेंगे ना। उसको कहा जाता है इनकॉरपोरीयल वर्ल्ड। यह है कॉरपोरीयल वर्ल्ड। आत्मा जब शरीर में आती है तो यह चुरपुर चलती है। नहीं तो शरीर कोई काम का नहीं रहता। तो उनको कहा जाता है निराकारी दुनिया। जितने भी आत्माएँ हैं वह सभी पिछाड़ी में आनी चाहिए। इसलिए इनको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। सभी आत्माएँ जब यहाँ आ जाती हैं तो वहाँ फिर एक भी नहीं रहती। वहाँ जब एकदम खाली हो जाता है तब फिर सभी आ जाते हैं। तुम सभी संस्कार ले जाते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई नॉलेज की संस्कार ले जाते हैं, कोई प्युरिटी के संस्कार ले जाते हैं। आना तो फिर भी यहाँ ही है; परन्तु पहले घर में जाना है ना। वहाँ हैं अच्छे संस्कार। यहाँ हैं बुरे संस्कार। अच्छे संस्कार बदल कर बुरे संस्कार बने हैं। फिर बुरे संस्कार योगबल से अच्छी होनी है। अच्छे संस्कार वहाँ ले जावेंगे। बाप में भी पढ़ाई का संस्कार है ना जो आकर समझाते हैं। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का राज़ आकर समझाते हैं। बीज के भी समझानी देते हैं तो सारे झाड़ की भी समझानी देते हैं। बीज की समझानी है ज्ञान। झाड़ की समझानी हो जाती है भक्ति। वह जैसे भक्ति का डिटेल समझाया जाता है। बीज को तो याद कर वहाँ ही चले जाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने से 40/50 वर्ष लगते हैं, फिर सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने में 5000 वर्ष लगते हैं एक्युरेट। वह अबाउट बताया जाता है 40/50 वर्ष। यह चक्र बड़ा ही एक्युरेट बना हुआ है जो फिर रिपीट होता रहता है। और कोई यह बातें बता न सके। तुम बता सकते हो। आधा आधा किया जाता है ना। आधा स्वर्ग आधा नर्क। फिर उनको डिटेल भी बताते हैं। स्वर्ग में जन्म कम क्योंकि आयु बड़ी होती है। नर्क में जन्म जास्ती आयु छोटी होती है। वह हैं योगी, यह हैं भोगी। इसलिए यहाँ बहुत जन्म होते हैं। इन बातों को दूसरा कोई भी नहीं जानता। मनुष्यों को कुछ भी मालूम नहीं है। देवताएँ थे, वह कैसे बने, कितने समझदार बने हैं। यह भी तुम जानते हो। बाप इस समय बच्चों को पढ़ा रहे हैं। 21 जन्मों के लिए वरसा देते हैं। फिर यह संस्कार तुम्हारी रहती ही नहीं। फिर हो जाते हैं सुख के संस्कार। जैसे कि राजाई के संस्कार होते हैं। ज्ञान और पढ़ाई के संस्कार यहाँ ही पूरी हो जाती है। फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रुद्र माला में पिरोये जावेंगे। फिर नम्बरवार ही आवेंगे पार्ट बजाने। जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं वही पहले आते हैं। उनका नाम भी बतलाते हैं। कृष्ण तो है फर्स्ट प्रिन्स ऑफ हेविन। तुम समझते हो सिर्फ एक कृष्ण थोड़े ही होगा। सारी राजधानी होगी ना। राजा

के साथ तो फिर प्रजा भी चाहिए। हो सकता है एक से दूसरे पैदा होते जाते। अगर कहे आठ इकट्ठे आते हैं; परन्तु श्री कृष्ण तो नम्बरवन में आवेंगे ना। आठ इकट्ठे आते हैं तो फिर कृष्ण का इतना गायन क्यों। यह सभी बातें आगे चलकर समझावेंगे। कहते हैं आज तुमको बहुत गुह्य–2 बातें सुनाता हूँ। कुछ तो रहा हुआ है ना। यह युक्ति अच्छी है। जिस बात में देखो नहीं समझते हैं तो बोलो हमारी बड़ी बहन उत्तर दे सकती है या तो कहना चाहिए अभी बाबा ने बताया ही नहीं है। दिन प्रतिदिन गुह्य ते गुह्य सुनाते रहते हैं। इस तरह कहने में लज्जा की बात नहीं। गुह्य ते गुह्य प्वाइंट्स जब सुनाते हैं तो तुमको सुनकर बहुत ही खुशी होती है। पिछाड़ी में फिर कह देते हैं मन्मनाभव। मद्याजीभव अक्षर भी शास्त्रों बनाने वालों ने लिखा है। जरूरत नहीं है। बच्चा बाप का बना और बेहद का सुख मिला। इसमें मनसा–वाचा–कर्मणा पवित्रता तो जरूर चाहिए। इनको (ल0ना0) को कब वरसा मिला है ना। यह है पहले नम्बर में। जिनकी ही पूजा होती है। अपने में भी देखो हमारे में कोई ऐसा गुण है। अभी तो अवगुण ही हैं ना। अपने अवगुणों का भी किसको पता नहीं है। अभी तुम बाप के बने हो तो जरूर चेंज होना पड़े। बाप ने बुद्धि का ताला खोला है। ब्रह्मा और विष्णु का भी राज़ समझाया है। यह हैं पतित, वह हैं पावन। एडॉप्टशन इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर होते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा जब है तब ही एडाप्शन होते हैं। सतयुग में तो होते ही नहीं। यहाँ भी किसको बच्चा नहीं होता है तो फिर एडाप्ट करते हैं ना। प्रजापिता ब्रह्मा को भी जरूर ब्राह्मण बच्चे ही चाहिए। यह है मुखवंशावली। वह होते हैं कुखवंशावली। ब्रह्मा तो नामीग्रामी है ना। इनका सरनेम ही बेहद का है। सभी समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा आदिदेव है। इसको कहेंगे ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। यह है बेहद का सरनेम। बाकी वह सभी हद के सरनेम हो जाते हैं। इसलिए बाप समझाते हैं यह जरूर सभी को मालूम होना चाहिए कि भारत बड़े ते बड़ा तीर्थ है जहाँ बेहद का बाप आते हैं। ऐसे नहीं कि सारे भारत में विराजमान है। शास्त्रों में तो मगधदेश लिखा हुआ है; परन्तु नालेज कहाँ सुनाई, आबू में कैसे आया। दिलवाला मंदिर भी यहाँ पूरा यादगार है। जिन्होंने यह बनाया है। उन्हों की बुद्धि में आया और बनाया। एक्युरेट मॉडल तो बना न सके। बाप यहाँ ही आकर सर्व की सद्गति करते हैं। मगध देश में नहीं। वह तो पाकिस्तान हो गया। यह फिर है नापाकिस्तान। वास्तव में पाकिस्तान स्वर्ग को कहा जाता है। पाक और नापाक यह सारा ड्रामा बना हुआ है।

तो मीठे2 सिकीलधे बच्चे तुम यह तो समझते हो आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल.....कितने काल? मिले फिर कब? सुन्दर मेला कर दिया जब सद्गुरु मिला दलाल के रूप में। गुरु तो बहुत हैं ना। इसलिए सद्गुरु कहा जाता है। स्त्री को जब हथियाला बांधते हैं तो भी कहते हैं यह पति तुम्हारा गुरु ईश्वर आदि सभी कुछ है। पति तो पहले2 ही नापाक बनाते हैं। बड़े ही धूमधाम से गन्द में जाते हैं। बम्बई में नटराज होटल बनी हुई है जहाँ खास जाकर हनीमून करते हैं। आजकल तो दुनिया में बहुत गन्द लगा पड़ा है। अभी तुम बच्चों को गुल2 बनना है। तुम बच्चों हनीमून तो यहाँ होता है। पक्का–2 हथियाला बाप से बांधते हैं। यूँ तो शिवजयन्ती साथ ही रखड़ी बन्धन हो जाना चाहिए। गीता जयन्ती भी होनी चाहिए। कृष्ण की जयन्ती थोड़ा देरी से होनी चाहिए। कृष्ण का जन्म नई दुनिया में होता है ना। बाकी त्योहार सभी इस समय के हैं। रामनवमी भी कब थी कोई कह सकेगा क्या! तुम कहेंगे नई दुनिया के 1250 वर्ष बाद में। शिवजयन्ती कब, कृष्ण जयन्ती कब, राम जयन्ती कब हुई यह भी कोई कह न सकेंगे। अभी तुम बच्चे बाप द्वारा जान गये हो। एक्युरेट बता सकते हो। गोया सारी दुनिया जीवन कहानी तुम सुना सकते हो। लाखों वर्ष की बात तो कोई सुना न सके। बाप कितनी अच्छी बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। एक ही बार। तुम 21 जन्मों लिए नंगन होने से बचते हो। वहाँ नंगन होते ही नहीं। बाबा पूछते भी हैं नंगन तो नहीं होते हो। यह है पतित दुनिया। इसलिए ही पुकारते हैं हे पतित पावन.....अभी तुम 5 विकारों रूपी रावण के पराई राज्य में हो। अभी स्मृति में आया है सारा 84 का चक्र। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।